अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर देशवासियों को आचार्यश्री महाप्रज्ञ का विशेष संदेश

हिंसा के बीज को खोजने का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दोनों स्तरों पर प्रयत्न हुआ है और आज भी हो रहा है। हिंसा की उग्रता को देखते हुए आज खोज की अपेक्षा उसके उपयोग की अधिक आवश्यकता है।

अहिंसा का प्रयोग व्यक्तिगत जीवन,पारिवारिक जीवन,सामाजिक जीवन,राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय–सभी स्तरों पर अपेक्षित है। समाज में हिंसा और आतंक ने जो भय का वातावरण पैदा किया है,उससे जीवन का आनंद विसाद में बदल रहा है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने हिंसा की समस्या की गंभीरता का आकलन करते हुए महात्मा गांधी के जन्म दिन को अंहिसा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है, वह वैश्विक हित की दृष्टि से बहुत महत्वपुर्ण है।

महात्मा गांधी का जीवन हिन्दुस्तान से जुड़ा हुआ है इसलिए हिन्दुस्तानी जनता का विशेष कर्तव्य है कि वे अहिंसा दिवस को अहिंसा की आन्तरिक आस्था के साथ मनाएं और अहिंसक जीवनशैली के विकास का संकल्प करें। इससे अहिंसा दिवस और अधिक गरिमामय बन सकेगा।

प्रज्ञाशिखर, भुवाणा
1 अक्टूबर, 2007

– आचार्य महाप्रज्ञ